दिनांक :- 10-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (इतिहास)

इकाई :- 6:

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास (कला)

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत

अजातशत्रु (492 ईसा पूर्व से 460 ईसा पूर्व)

अजातशत्रु को कुणिक नाम से भी जाना जाता है उसने अपने पिता की साम्राज्यवादी नीति को जारी रखा उसने बिम्बिसार की पदच्यूत से क्रुद्ध हुए कोशल पर हमला कर उसे परास्त किया तथा प्रसेनजित की पुत्री वाजिरा से विवाह कर लिया। माना

जाता है कि उसने वृज्जि संघ की शक्ति को तोड़ दिया। अपने मंत्री सुनीध एवं वर्षकार की मदद से वह वृज्जि संघ की शक्ति से वह वृज्जि संघ में फूट डलवाने में सफल रहा और फिर उसने संघ को समाप्त कर दिया जैन ग्रंथ निरया वलिसुत से ज्ञात होता है कि उस समय चेटक लिच्छवी गण का प्रधान था। महापरिनिब्बाण सुत्त के अनुसार जिस समय अजातशत्रु वैशाली विजय की तैयारी कर रहा था। उस समय महात्मा बुद्ध राजगृह में ही थे।

व्यक्तिगत एवं राजा के तौर पर अजातशत्रु धार्मिक रूप से उदार था। दीर्घनिकाय के सामञ्ञफल सुत्त से ज्ञात होता है कि उसे उस समय प्रचलित सभी मत-मतांतर की जानकारी थी। भरहुत स्तूप की एक वेदिका पर उसे बुद्ध की वंदना करते दिखाया गया है। यद्यपि वैशाली को अनेक मगध विरोधी राज्यों का समर्थन मिला तथापि वृज्जि संघ पराजित हुआ

प्रो० हेमचंद्र रायचौधरी के अनुसार दरअसल यह संघ मगध के बढ़ कर रहे प्रभाव के विरोध में चल रहे आंदोलन के प्रतीक जैसे थे उसी के समय राजगृह के सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ था।

पुराणों के अनुसार अजातशत्रु का निकटतम उत्तराधिकारी दर्शक था। जबकि जैन एवं बौद्ध लेखक उदयिनु को उसका उत्तराधिकार मानते हैं। उदयिन जैन मतावलंबी बताया गया है।

उदयिन को यह श्रेय दिया जाता है कि उसने कुसुमपुर या पाटलिपुत्र की नींव डाली।

शिशुनाग वंश

बौद्ध साहित्य के अनुसार राजा नागदासक को नागरिकों द्वारा निष्कासित कर दिया गया फिर नागरिकों ने एक सभा बुलाई और शिशुनाग को शासक

नियुक्त किया। के अपनी नियुक्ति के समय वह बनारस का मगध गवर्नर था। शिशुनाग की सबसे बड़ी उपलब्धि रही कि उसी ने अंवति को अपने साम्राज्य मे मिलाने में सफलता पाई। इस समय अंवति का शासक अवंतिवर्धन था। इस विजय से वत्स साम्राज्य का भू भाग भी उसके अधीन आ गया

शिशुनाग ने वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।

शिशुनाग का उत्तराधिकारी कालाशोक था इसके समय मगध साम्राज्य की राजधानी पुनः पाटलिपुत्र स्थानांतरित हो गई।

कालाशोक को पुराणों मे काकवर्ण कहा गया है। इसके काल मे वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति आयोजित हुई।

महावंश के अनुसार कालाशोक के दस पुत्र हुए जिनमें नन्दिवर्धन, संवू दशम पंचमक थे।

नंद वंश

नंद वंश की स्थापना उग्रसेन (पालि ग्रंथ) या महापद्मनंद (पुराण) ने की। पुराण उसे शिशुनाग वंश के अंतिम शासक महा

नन्दिन का पुत्र तथा शूद्र स्त्री से उत्पन्न मानता है। दूसरी तरफ जैन लेखक उसे एक नाई और वेश्या का पुत्र बताता है। पुराणों में उसे सर्वक्षत्रांक की उपाधि दी गई है। कलिंग के शासक खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख से ज्ञात होता है कि उसने कलिंग के कुछ क्षेत्रों पर अपना आधिपत्य कर लिया। उसके राज्य के अंतर्गत पंजाब के संपूर्ण उत्तरी भारत, मालवा, मध्यप्रदेश तथा गोदावरी नदी तक का इलाका आ गया। प्रथम के उत्तराधिकारी उसके आठ पुत्र हुए जिनमें अंतिम का नाम धनानंद था। इसे ग्रीक लेखकों ने अग्रमीज या जैन्द्रमीज (xandrames) लिखा है। इस राजा के पास एक बहुत बड़ा कोष था तथा एक बहुत बड़ी सेना भी। कर्टियस के अनुसार अग्रमीज के पास 20 हजार घुड़सवार, दो लाख पैदल सैनिक, दो हजार रथ तथा तीन हजार हाथियों की सेना थी।

Scanned with CamScanner

महापद्मनंद ने कलिंग में एक नहर का भी निर्माण करवाया।

बुद्धकालीन अराजक गणतंत्र —

बुद्धकालीन पाली ग्रंथो के अध्ययन से पता चलता है कि

उस समय कुछ गणतंत्र भी थे जैसे:-

(1) कपिलवस्तु के शाक्य — यह नेपाल की तराई में स्थित थे इस

की राजधानी कपिलवस्तु थी। इस गणराज्य के अन्य प्रमुख नगर

थे: चतुमा सामगामा, नकरक देवदह सक्कर आदि।

बुद्ध की माता देवदह की कन्या थी। शाक्य गणराज्य रक्त

शुद्धता पर गर्व करता था तथा इसे बचाने के लिए अपने जाति

से बाहर विवाह संबंध नही करता था।

बुद्ध भी शाक्य जाति के ही थे।

(2) सुम सुमगिरी के भग्ग (भर्ग) वर्तमान चुनार के क्षेत्र में स्थित था

(3) अलकप्प के बुलि — आधुनिक बिहार प्रांत के शाहाबाद, आरा तथा

मुजफ्फरपुर जिलो के बीच स्थित था। गणतंत्र बौद्ध अनुयायी

Scanned with CamScanner

था तथा इसने बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात उनके अव
शेषो पर स्तूप का निर्माण करवाया।

(4) केशपुत्र के कलाम - यह कोशल के पश्चिम में स्थित था।
इसी गणराज्य के अलार कलाम थे।

(5) रामग्राम के कोलिय :- कोलियो की राजधानी रामसागर
की पहचान वर्तमान गोरखपुर जिले मे स्थित रामगढ़
ताल से की गई थी।
ये शाक्यो के पूरब की ओर बसे थे और दोनो की सीमा
रोहिणी नदी थी। शाक्यो तथा कोलियो के मध्य प्रायः
विवाद भी होते थे। ऐसे ही एक विवाद की मध्यस्थता
महात्मा बुद्ध ने की थी।

(6) पावा के मल्ल :- आधुनिक कसिया में स्थित है। यह इ
बात से प्रमाणित होता है कि वहाँ एक छोटे मंदिर में बुद्ध
की परिनिर्वाण मुद्रा मे मूर्ति मिली है।
बाल्मिकी रामायण में इसे लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु
मल्ल का वंशज बताया गया है